65

''अब मुझ में किस बात की घटी है?''

मरकुस 10:17-27; मत्ती 19:16-26; लूका 18:18-27, एक निकट दृष्टि

मेडिकल साइंस में अब शरीर के अन्दर देखने के कई प्रकार के औज़ार हैं, जैसे एक्स-रे मशीनें, CAT स्कैन, MRI और ऐसे कई यन्त्र। आप हैरान हो सकते हैं, ''यदि कोई किसी के *मन* का एक्स-रे लेकर यह देख ले कि उसके मन में क्या चल रहा है, तो?'' यीशु ले सकता था। वह नीचे, हृदय के अन्दर झांककर जांच सकता था कि कोई व्यक्ति वास्तव में क्या है। मरकुस 10:17-22 में इसका एक उदाहरण है:[1]

> और जब वह निकलकर मार्ग में जाता था, तो एक मनुष्य उसके पास दौड़ता हुआ आया, और उसके आगे घुटने टेककर उस से पूछा, हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिए मैं क्या करूं? यीशु ने उस से कहा, तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात् परमेश्वर। तू आज्ञाओं को तो जानता है; हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, छल न करना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना। उस ने उस से कहा, हे गुरु, इन सब को मैं लड़कपन से मानता आया हूं। यीशु ने उस पर दृष्टि करके उस से प्रेम किया, और उस से कहा, तुझ में एक बात की घटी है; जा, जो कुछ तेरा है, उसे बेच कर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले। इस बात से उसके चेहरे पर उदासी छा गई, और वह शोक करता हुआ चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।

उस जवान के जीवन में किस बात की घटी थी?

कुछ लोग, हमें तुरन्त पसन्द आ जाते हैं; जबकि दूसरों को समझने के लिए हमें कुछ समय लगता है। यह जवान जो, मरकुस 10 अध्याय में यीशु के पास आया था, ऐसा है जिसे हम तुरन्त पसन्द करने लगते हैं। उसमें कई सराहनीय गुण थे।

(1) वह सही रास्ते पर आया: वह यीशु से भेंट करने के लिए भाग कर आया। हमें

आम तौर पर वही लोग पसन्द होते हैं, जिन्हें पता होता है कि उन्हें क्या चाहिए और अपने लक्ष्य को पाने के लिए वे जल्दी करते हैं। इसके अलावा, इस आदमी ने मसीह के आगे घुटने टेके। वह ऐसा विद्रोही जवान नहीं था, जो अधिकार का सम्मान न करता हो।

(2) वह सही उद्देश्य के लिए आया: उस उम्र में, जब अधिकतर लोग केवल इस जीवन के बारे में सोचते हैं, उसका ध्यान उस बात अर्थात अनन्त जीवन पर था, जो वास्तव में महत्वपूर्ण है।

(3) वह सही जगह आया: उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि उसके साथी क्या कहेंगे, लोग क्या सोचेंगे या धार्मिक अधिकारी क्या सिखाते हैं। उत्तर पाने के लिए वह *मसीह* के पास आया।

(4) वह सही समय पर आया: जब वह जवान ही था। बुद्धिमान ने कहा है, ''अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण रख, इससे पहले कि विपत्ति के दिन और वे वर्ष आएं, जिन में तू कहे कि मेरा मन इन में नहीं लगता'' (सभोपदेशक 12:1)।

इन अच्छे गुणों के बावजूद, उसने इस बात को समझा कि उसके जीवन में किसी बात की कमी थी। उसने पूछा, ''हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिए मैं क्या करूं?'' (मरकुस 10:17)।

क्या आपने कभी ऐसा प्रश्न पूछा है, जिसका अप्रासंगिक उत्तर मिला हो? पहली नज़र में, यीशु का उत्तर ऐसा ही लगता है: ''तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात् परमेश्वर'' (मरकुस 10:18)

कुछ लोग जो मसीह के परमेश्वर होने को मानने से इनकार करते हैं, यह साबित करने के लिए कि यीशु ने स्वयं परमेश्वर होने का इनकार किया, इसी आयत का इस्तेमाल करते हैं। परन्तु अन्य जगहों पर मसीह ने अपने परमेश्वर होने की पुष्टि भी की। उदाहरण के लिए यूहन्ना 14:9 में उसने कहा, ''जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को देखा है।'' यहां पर उसके इस बात का इनकार करने का सवाल ही नहीं होना था। वास्तव में यीशु के शब्दों को और गहराई से देखने पर हम पाते हैं कि अपने परमेश्वर होने का इनकार करने के बजाय, उसने इसकी पुष्टि ही की। उस आदमी ने मसीह को ''उत्तम *गुरु*'' कहा था, जिसमें इस बात का कोई संकेत नहीं था कि उसे यीशु के मसीहा होने की समझ थी। यीशु ने ''उत्तम'' शब्द से पकड़कर यह ध्यान दिलाया कि यदि उस आदमी का विचार *उत्तम* था, तो वह *परमेश्वर* ही होना चाहिए, क्योंकि उत्तम तो केवल परमेश्वर ही है।

यीशु की बात दो धारी तलवार है। यह उन लोगों को दोषी ठहराती है, जो कहते हैं कि अच्छा था परन्तु परमेश्वर नहीं: यदि वह अच्छा था, तो वह परमेश्वर था; और यदि वह परमेश्वर नहीं था, तो वह अच्छा नहीं था। यह बात उन लोगों को भी दोषी ठहराती है, जो सोचते हैं कि वे इतने अच्छे हैं कि अपनी अच्छाइयों से उद्धार पा लेंगे। ''कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात् परमेश्वर।''

अपने परमेश्वर होने की अवधारणा का परिचय देने के बाद, मसीह ने उस व्यक्ति के प्रश्न का उत्तर दिया: ''तू आज्ञाओं को तो जानता है; हत्या न करना, व्यभिचार न करना,

चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, छल न करना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।'' इस जवान खोजी ने एक साधारण गलती की थी; उसने सोचा कि एक ज्ञानी शिक्षक को परमेश्वर की मूल आज्ञाओं में और जोड़ना चाहिए। बहुत से लोगों को नये नियम की मसीहियत इतनी सरल और अपने स्वाद के लिए फीकी लगती है कि वे और चाहते हैं। क्योंकि वे और चाहते हैं, इसलिए और जोड़ लेते हैं (2 तीमुथियुस 4:3, 4)। परन्तु यीशु ने उस व्यक्ति को *परमेश्वर की* शर्तें याद दिलाईं। मत्ती के अनुसार, उसने कहा, ''यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं को माना कर'' (मत्ती 19:17ख)।

लोग ''कुछ न करने वाला'' धर्म चाहते हैं। मैं उन्हें रोमियों 4:5 लेकर (''जो काम नहीं करता'') यह ज़ोर देने की कल्पना कर सकता हूं कि इसमें यह सिखाया गया है कि उन्हें काम करना ही नहीं चाहिए।[2] यीशु ने सिखाया कि अनन्त जीवन पाने के लिए परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना आवश्यक है। उस समय, अर्थात मसीह की मृत्यु से पहले, आज्ञाएं मूसा की व्यवस्था वाली ही थीं।[3] इसीलिए यीशु ने दस आज्ञाओं से उद्धृत किया। आज हम मसीह की नई वाचा के अधीन रह रहे हैं और प्रभु की आज्ञाएं, आज भी प्रभावी हैं। यीशु ने कहा, ''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे'' (यूहन्ना 14:15)। यूहन्ना ने लिखा है, ''और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें'' (1 यूहन्ना 5:3क)।

वे आज्ञाएं क्या हैं? मैं आपको उनमें से कुछ याद दिलाता हूं:[4] मसीह ने कहा, ''यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं, तो अपने पापों में मरोगे''; ''यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे''; ''जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा''; ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले, उसी का उद्धार होगा'' (यूहन्ना 8:24; लूका 13:3; मत्ती 10:32; मरकुस 16:16)। उन्हें जो पहले से चेले थे, यीशु ने कहा, ''... जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी का उद्धार होगा'' (मत्ती 10:22)।

याद रखें, अनन्त जीवन पाना सीखने के लिए लोगों की ओर न देखें; बाइबल में देखें। यह भी याद रखें कि मसीह ने सिखाया है कि हमें परमेश्वर के अनुग्रह और दया को पाने के लिए कुछ *करना* आवश्यक है।

जब यीशु ने उस जवान को सब आज्ञाएं मानने के लिए कहा, तो वह इतने से सन्तुष्ट न हुआ। उसने कहा, ''हे गुरु, इन सब को मैं लड़कपन से मानता आया हूं।'' आप नहीं चाहते कि काश आप भी ऐसा कह सकते? हम में से अधिकतर ऐसा नहीं कह सकते। पहली बात तो यह कि हम ने हमेशा सही नहीं किया। दूसरी यह कि लड़कपन में हम ने सही काम करने की कोशिश ही नहीं की होगी। जवान लड़कों और लड़कियों को देखकर, जिन्होंने पहले से परमेश्वर की इच्छा के आगे अपने आप को सौंप दिया है, कितना अच्छा लगता है।

यहां पर, मत्ती के अनुसार उस आदमी ने पूछा, ''अब मुझ में किसी बात की घटी है?'' (मत्ती 19:20)। उसने वह सब किया था जो वह जानता था कि उसे करना चाहिए,

इसलिए उसने पूछा कि ''अब किस बात की कमी है?'' हम में से हर किसी को गम्भीरतापूर्वक मन को टटोलने वाले इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए।

जब उस जवान ने पूछा कि उसमें किस बात की कमी है, तो ''यीशु ने उस पर दृष्टि करके उस से प्रेम किया'' (मरकुस 10:21)। जैसा कि इस प्रवचन के आरम्भ में ध्यान दिलाया गया था कि प्रभु किसी भी व्यक्ति में देख सकता है। उसने जब इस व्यक्ति के मन में देखा, तो उसे देखकर अच्छा लगा। उसे देखकर सब कुछ अच्छा नहीं लगा, परन्तु उसमें निष्कपटता थी और बहुत क्षमता थी। इसीलिए ''यीशु ने ... उससे प्रेम किया।''

क्या आपने कभी अपने किसी प्रिय से कुछ ऐसा कहा है, यह जानते हुए कि आपकी बात से कुछ देर के लिए उन्हें दुख होगा, परन्तु आपने उनके भले के लिए कह दिया, क्योंकि आप उनसे प्रेम करते थे? यीशु ने यही किया। यीशु जानता था कि उस व्यक्ति की क्या समस्या है और *इसलिए* कि वह उससे प्रेम करता था (देखें इब्रानियों 12:6), उसने कहा, ''तुझ में एक बात की घटी है। जा, जो कुछ तेरा है उसे बेचकर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा और आकर मेरे पीछे हो ले।''

प्रभु के शब्दों को समझने के लिए दो बातें ध्यान में रखें। पहली, यीशु के मन में स्पष्टतया इस जवान के लिए एक विशेष काम था। आज्ञाएं यही थीं कि *पूर्णकालिक* चेले बनने के लिए क्या आवश्यक है: ''जो कुछ तेरा है उसे बेचकर कंगालों को दे और मेरे पीछे हो ले'' (देखें मत्ती 4:18-22; लूका 5:11, 27, 28)।

दूसरा, *किसी भी* चेले के लिए पहली शर्त प्रभु के प्रति *पूर्ण समर्पण* का होना है। परमेश्वर ''जलन रखने वाला ईश्वर'' है (निर्गमन 20:5), और वह विभाजित मोह को सहन नहीं करेगा। उस जवान के मामले में, उसका ध्यान अपनी सम्पत्ति पर इतना अधिक था कि वह मसीह का चेला नहीं बन सकता था। उसका धन उसमें और सम्पूर्ण समर्पण के बीच बाधा बन गया, इसलिए यीशु ने उसे इसे छोड़ने को कहा। वह मांग करता है कि हम सब *किसी भी ऐसी चीज़ को* जो हमें उसके प्रति पूर्ण समर्पण से रोकती है, त्याग दें। यह चीज़ धन हो सकता है। व्यक्तिगत आनन्द, व्यक्तिगत गलती या गलत मित्र हो सकते हैं। जो भी हो, प्रभु मांग करता है कि हमारे विचारों और ध्यान में *पहल* उसी को मिले।

यदि आपको दुखद अन्त वाली कहानियां पसन्द नहीं हैं, तो शायद आपको इस कहानी का अन्त नहीं सुनना चाहिए। यीशु ने उस जवान की प्राथमिकताओं को परखा था और वह उस परीक्षा में नाकाम हो गया। ''इस बात से उसके चेहरे पर उदासी छा गई, और वह शोक करता हुआ चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।''

उसे इस बात का श्रेय जाता है कि वह उदास हुआ। उसने मसीह के निमन्त्रण का छिछोरे ढंग से इनकार नहीं किया, जैसा कि आज कुछ लोग करते हैं।[5] उसका मुंह उतरा था क्योंकि वह प्रभु से प्रेम करता था, परन्तु अपने धन से भी प्रेम करता था-और उसे दोनों में से एक को चुनना था। वह दोनों को ही छोड़ना नहीं चाहता था; इसीलिए यीशु को छोड़कर जाते समय वह उदास था। इस पर विचार करें: वह मसीह से प्रेम करता था; पर अपने धन से वह *इससे अधिक* प्रेम करता था। सावधान रहें कि आप कहां मन लगाते हैं।

''वह शोक करता हुआ चला गया''-पर वह चला गया, और उसका परिणाम वही हुआ, जो सम्मान न करने वाले और कठोर व्यक्ति होने पर होता है। उसने उस अनन्त जीवन को, जिसे वह बहुत चाहता था अपने आप से निकाल कर, गलत पसन्द को चुना।

मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूं: क्या ऐसा हो सकता है कि यीशु किसी से प्रेम करे और फिर भी वह व्यक्ति खो जाए? मसीह इस व्यक्ति से प्रेम करता था और वह खो गया था। प्रभु का प्रेम (रोमियों 5:8) ही काफ़ी नहीं है। उस प्रेम के बदले में उसकी इच्छा को मानकर आपको भी प्रेम लौटाने के लिए तैयार होना आवश्यक है (यूहन्ना 14:15)।

आपके जीवन में क्या घटी है?

उस जवान की कहानी एक दुखद टिप्पणी के साथ समाप्त हुई, परन्तु मैं आपको बताता हूं कि इस प्रवचन का सुखद अन्त कैसे हो सकता है: वही प्रश्न जो उसने पूछे थे, आप अपने आप से पूछें और फिर वही *करें,* जो प्रभु आपसे करने के लिए कहता है। यह पूछते हुए आरम्भ करें, ''मुझ में अब किस बात की घटी है?'' कुछ देर पहले, हमने यीशु की कुछ आज्ञाएं देखी थीं। क्या आप में विश्वास की घटी है? क्या आप में मन फिराने की घटी है? क्या आप में अंगीकार की घटी है? क्या आप में बपतिस्मे की घटी है? क्या आप में विश्वास या समर्पित जीवन की घटी है? प्रश्न पूछने वाले को मसीह ने बताया था, ''तुझ में एक बात की घटी है'' (मरकुस 10:21)। क्या परमेश्वर की बात मानने के लिए आप में किसी बड़ी बात की घटी है? मैंने खेत में खराब हुई एक बड़ी कम्बाइन को खड़े देखा था, क्योंकि उसका एक पार्ट नहीं मिल रहा था। एक ही चीज़, पतवार के बिना जहाज़ बेकार हो जाता है।[6]

प्रभु की शर्तों में से किसी एक की आज्ञा न मान पाने का परिणाम खतरनाक हो सकता है। यीशु ने कहा, ''... यदि तुम विश्वास न करोगे ... तो अपने पापों में मरोगे''; ''यदि तुम मन न फिराओगे तो ... नाश होगे''; ''जो कोई ... मेरा इनकार करेगा, उससे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इनकार करूंगा''; ''जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता'' (यूहन्ना 8:24; लूका 13:3; मत्ती 10:33; यूहन्ना 3:5)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने मसीही लोगों से पूछा था, ''हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर क्योंकर बच सकते हैं?'' (इब्रानियों 2:3)। प्रभु को मालूम है कि आपके जीवन में क्या घटी है, और शायद आपको भी।

इस पर विचार करें: उस धनवान जवान में इस एक बात की कमी न होती अगर उसने मसीह की शर्त को मान लिया होता। चालीस से भी कम वर्षों बाद, रोमियों ने देश का सफ़ाया करके, यहूदियों के भविष्य को मिटा दिया और उन्हें गुलाम बना लिया था। अन्त में, उस व्यक्ति ने केवल ''स्वर्ग में धन'' ही नहीं खोया बल्कि वह भी खो दिया जो उसने पाए रखने की कोशिश की थी। यदि आप अपने आप को प्रभु को देते हैं, तो आप किसी मूल्यवान चीज़ को नहीं खोएंगे (फिलिप्पियों 3:7, 8)। आपको पृथ्वी पर यहां आनन्दपूर्ण और भरपूरी का जीवन मिलेगा, और इस जीवन के बाद परमेश्वर के भण्डार आपकी

प्रतीक्षा कर रहे होंगे (मत्ती 19:29)।

यदि आपके जीवन में किसी बात की घटी है, तो अभी, प्रभु के पास आ जाएं और वह आपकी उस घटी को पूरा कर देगा।

टिप्पणियां

[1]इस प्रवचन में मुख्य आयतें मरकुस 10 से ही हैं, पर कहीं-कहीं मैंने मत्ती 19 और लूका 18 की समानान्तर आयतों से भी हवाले लिए हैं। [2]रोमियों 4:5 और उससे जुड़ी आयतें सिखाती हैं कि हम अपना उद्धार कमा नहीं सकते; परन्तु वह यह नहीं कहती कि यदि हम उद्धार पाना चाहते हैं तो परमेश्वर की आज्ञा मानना आवश्यक नहीं है। [3]यीशु की मृत्यु तक पुरानी वाचा प्रभावी थी; उस समय, नई वाचा प्रभावी हुई (देखें कुलुस्सियों 2:14; इब्रानियों 9:15-17)। [4]इस प्रवचन का इस्तेमाल आपके सुनने वालों के जीवनों में पाई जाने वाली किसी भी ''कमी'' की ओर ध्यान दिलाने के लिए किया जा सकता है। इस प्रस्तुति में, ज़ोर मसीह बनने पर है, पर प्रवचन विश्वासी मसीही जीवन जीने पर ज़ोर देने के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है। [5]आप लोगों से प्रभु की आज्ञा मानने का आग्रह करने के लिए उनके लापरवाह उत्तरों के उदाहरण दे सकते हैं। [6]''केवल एक चीज़'' कम होने के विनाशकारी प्रभाव का अपना अनुभव बता सकते हैं।